कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

एक सूर्य है, एक गगन है, एक है धरती माता
वैशिष्ट्य इस वसुधा का, अनेकता में एकता।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 28, अंक 1
जनवरी-मार्च 2017 (विक्रम संवत् 2074)

सम्पादक
स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,
गुलमोहर पार्क के पास
हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 2
- सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जुड़ाव... 3
- जशपुर यात्रा के संस्मरण 6
- श्रीमती माधवी जोशी के साथ... 7
- MEMORABLE TRIP TO BALARAMPUR 7
- मकर संक्रान्ति... 8
- स्व. भास्कर राव का पुण्य स्मरण... 9
- गोसाबा छात्रावास का भ्रमण 9
- परस्पर प्रेम और विश्वास... 10
- पटना में केन्द्रीय कार्यकारी 11
- शोकसंवाद 12
- चिकित्सा शिविर 12
- आगामी कार्यक्रम 12
- प्रेरक प्रसंग... 13
- प्रेरक उपलब्धि... 13
- वनभोज 13
- धर्मान्तरण करने वालों पर ... 14
- अनुकरणीय 15
- बोधकथा... सुई और कैंची 16
- कविता... नव वर्ष आया है द्वार 16

संपादकीय...

नव वर्ष पर करें नव प्रस्थान

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा हिन्दुओं का विज्ञान सम्मत सर्वमान्य नूतन वर्षारंभ है। इस समय प्रकृति सरसों के फूल, आम्र मंजरी एवं नव कोपलों एवं कमल दल के प्रस्फुटन से सौरभ के रथ पर आसीन होकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करती है। इस प्रकार नूतन वर्ष प्रकृति के साथ मानव मात्र को जोड़कर शक्ति अर्जन की प्रेरणा और प्रवृत्ति को जगाता है। भारतीय मनीषा ने सदैव मर्यादित आचरण, सत्यनिष्ठ व्यवहार एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्व दिया है। हमारे जीवन का लक्ष्य कभी भी खाओ, पीओ, मौज करो नहीं रहा वरन् निरन्तर निष्काम कर्म एवं आत्म जागरण रहा है। पाँच राज्यों पंजाब, उत्तराखण्ड, गोवा, मणिपुर एवं उत्तरप्रदेश में विधानसभा के चुनाव नतीजों में भाजपा ने लाजवाब राजनैतिक विजय हासिल की है। भाजपा को जो व्यापक समर्थन मिला है उसके पीछे हमारी प्रखर देशभक्ति और हिन्दू संस्कृति के प्रति असंदिग्ध निष्ठा है। देश का माहौल भी बदल गया है और दिशा भी। इन नतीजों ने जाति,समुदाय और धर्म आदि के तमाम समीकरणों पर सवालिया निशान लगाते हुए सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद की अभेद्य मानी जाने वाली दीवार तोड़ डाली है। साबित हुआ कि मतदाता का मन बदल रहा है। दूसरे, नोटबंदी से लोगों में नाराजगी का कयास झूठा साबित हुआ। इस ऐतिहासिक जीत ने देशवासियों को उत्साह से लबरेज कर दिया है। देश के पास अब एक ही मुद्दा है वह है विकास का, प्रगति का। हमें अभी कई मोर्चों पर काम करना है। वस्तुत: यह जीत तो एक प्रारंभ है। इस प्रारंभ का अर्थ है हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा। आज समाज में बहुत बड़ी संख्या में गोवध, धर्मान्तरण, बहन-बेटियों का अपहरण, बलात्कार, राष्ट्रगीत वन्देमातरम् का विरोध, भारत के मान-सम्मान के मान बिन्दुओं पर हमला आदि घटनाएं बढ़ रही हैं। इनके प्रतिकार के लिए सबको आगे आना होगा। जो तमोगुणी अंधेरा हमें घेरे हुए है उसे छांटना है। राष्ट्र और राष्ट्रीयता, स्वदेश और स्वदेशी के भावों को प्रखर करना होगा। राष्ट्र के लिए अपशकुनी शक्तियों का समूल नाश करने हेतु प्रतिबद्ध होना होगा।

नववर्ष के सन्दर्भ में यह चुनाव परिणाम हम सबके लिए आश्वासन है कि नियति भारतवासियों को उनकी भावी भूमिका के लिए तैयार कर रही है। अब तक हम सोए भी रहे तो क्षम्य था किन्तु अब जब सारे संयोग अनुकूल हो रहे हैं तो हमें परिश्रम की पराकाष्ठा करनी होगी। स्वामी विवेकानन्द का आह्वान **उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्** -उठो, जागो एवं जब तक अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त न कर लो चैन से न बैठो– पग-पग पर हमारा मार्गदर्शन कर रहा है।

प्रत्येक भारतवासी भारतमाता के दैदीप्यमान स्वरूप को देखने के योग्य स्वयं को साबित करे। स्वयं धर्म के मार्ग पर चले और अपने साथ हजारों करोड़ों देशवासियों को इस मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करे। नगर, ग्राम, वन सब विकास के आलोक से जगमगा उठे। शुभ भावों का माहौल बने। हमारे जीवन का हर पल सचेतन हो उठे। सब में सबके प्रति मंगलमयी शुभकामना जगे। माँ भारती विश्व के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान हो। नियति के इस संकेतों को समझें एवं उसी के अनुसार राष्ट्र निर्माण के पुनीत कार्य में दुगुने उत्साह के साथ लग जाएं।

साधारण नामधारी नवसंवत्सर 2074 आप सभी के लिए मंगलकारी, कल्याणकारी हो। सबके जीवन में नव उत्कर्ष, सुख तथा समृद्धि प्रवाहित हो। इतिशुभम्।

- स्नेहलता बैद

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जुड़ाव: वनवासी एवं शेष भारतियों का

- डॉ. प्रसन्न दामोदर सप्रे

भारत में जनजाति समाज की जनसंख्या 8 प्रतिशत है, तात्पर्य 11 करोड़। अंग्रेजों ने बिना ऐतिहासिक तथ्यों के कह दिया कि भारत का मूल या आदिवासी समाज द्रविड़ और विभिन्न जनजाति का रहा और बिना कोई तथ्य के मैक्समूलर महोदय ने घोषित किया कि युरेशिया के मध्यक्षेत्र से तथाकथित आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया और मूलनिवासियों को जंगल व पहाड़ी क्षेत्रों में और दक्षिण दिशा में भगा दिया। शिक्षा क्षेत्र में यही गलत बयानी विगत डेढ़-दो सौ वर्षों से, तात्पर्य सात-आठ पीढ़ियों से पढ़ाई जा रही है। अत: यह गलत धारणा तमाम तथाकथित बुद्धिजीवी, वामपंथी, तथाकथित सेकुलरवादी लोगों के अंदर तक रच-बस गयी है। वे तथ्यों की ओर आंखें मूदें रखना ही पसंद करते हैं।

यदि भारतीय संस्कृति के प्रारंभिक ऐतिहासिक प्रमाणों को देखा जाय तो उपरोक्त सिद्धांत की पुष्टि के लिए कोई भी तथ्य नहीं मिलते। विश्व के सर्वाधिक पुराने ग्रंथ वेदों में भी ऐसे तथ्य नहीं मिलते। वेदों का एक प्रचलित शब्द 'पांचजन' है। मध्ययुगीन वेदों के प्रकांड विद्वान सायणाचार्य और आधुनिककालीन वेदों के महान पंडित भारतरत्न श्री सातवलेकरजी ने 'पांचजन' में चारों वर्ण के अतिरित पांचवे जन याने 'निषाद' या 'वन के निवासी' (जनजाति) को माना है। उपनिषद के टीकाकार 'निषादाचार्य' हुए जिन्होंने सबसे अधिक विस्तृत रुप से टीका लिखी है वे वनवासी थे। दिमासा जनजाति के राज्य की राजधानी डीमापुर रही जिसे अंग्रेजों ने उन्नीसवीं सदी में हड़प लिया। यह राजपरिवार स्वयं को घटोत्कच के वंश का मानते रहे हैं। त्रिपुरा की देवबर्मन जनजाति स्वयं को बभ्रुवाहन के वंश का मानती रही है। दोनों राजाओं की लगभग दो सौ पीढ़ियां हो चुकी है।

भरत के नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा है और ये भरत कौरव-पांडवों के पूर्वज थे। महाभारत और रामायण ये दो ग्रंथ इतिहासग्रंथ माने जाते हैं। रामायण ग्रंथ के प्रणेता वाल्मीकि ऋषि थे जो वनवासी थे। राम के जीवन का मुख्य कालखंड, प्रेरक कालखंड, वनों में वनवासियों के बीच बीता है। हनुमान, सुग्रीव, नल, नील आदि वनवासी उनके सखा थे, मित्र थे। राम हनुमान को भरत के समान अपना प्रिय भाई मानते थे। हनुमान को बुद्धिमानों में वरिष्ठ माना गया है।

आज के इतिहासकार ढाई हजार साल के भारत के 'इतिहास' को मान्यता देते हैं। यूनान के सिकंदर ने सवा दो हजार वर्ष पूर्व भारत पर आक्रमण किया। वायव्य दिशा के सरहदी पहाड़ी क्षेत्रों में कई जनजाति राजा और लोकतंत्रीय राज्य भी थे। इनमें से एक 'मस्सागा' नामक जनजाति ने जो संघर्ष किया उसका वर्णन 'दी क्लासिकल स्टोरी ऑफ इंडिया' के यूरोपीय लेखक ने किया है। इस छोटे से राज्य के राजा ने सिकंदर के सामने शरणागति को स्वीकार नहीं किया। रात में ही पूरी जनजाति के सक्षम लोगों ने युद्ध किया जिसमें सभी मारे गए, एक व्यक्ति भी जिंदा नहीं बचा! स्वतंत्रता के लिए इतना बड़ा बलिदान विश्व के इतिहास में अजोड़ माना जाएगा। सिकंदर पंजाब को जीतने के पहले ही, युद्धों की तीव्रता को देखकर, सिंधु नदी के दक्षिणी बहाव की दिशा में सेना लेकर भाग गया था। भारत पर यह शायद पहला विदेशियों का आक्रमण था।

हम जानते हैं कि सिसोदिया कुल के मेवाड़ राज्य के संस्थापक बप्पारावल और बाद में महाराणा प्रताप के

सर्वाधिक सहयोगी भील जनजाति की सेना थी जो प्राय: धनुर्धारी थे। भील क्षेत्र के गोगुंदा को राणा प्रताप ने विपत्तिकाल में राजधानी बनाया और प्राय: 24-25 वर्ष एशिया खंड के प्रतापी सम्राट अकबर से युद्ध किया और चित्तौड़ को छोड़कर पूरे मेवाड़ को स्वतंत्र किया था। संपूर्ण कालखंड में एक भी भील ने विश्वासघात नहीं किया। छत्रपति शिवाजी ने भी मावलों की सेना को लेकर, जिनमें अधिकांश जनजाति के सैनिक व सेनापति थे, तीन-तीन सल्तनतों-बादशाहों का सामना करते हुए स्वराज्य की संस्थापना की थी जो इतिहास प्रसिद्ध है। किलों की अग्रिम रक्षा पंक्ति में अधिकांशतया वनवासी रहा करते थे। अग्रिम पंक्ति में तो देश और 'धर्म' के दीवाने लोग ही रह सकते हैं यह सभी समझ सकते हैं। बिहार के रोहतासगढ़ में उरांव जनजाति का राज था। इस पर पठानों ने अचानक आक्रमण किया। पुरुष समाज लड़ने की स्थिति में नहीं था, तो महिलाओं ने ही पुरुषवेश धारण करके आक्रमणकारियों को परास्त किया। ऐसा दो बार हुआ। परंतु तीसरी बार पठानों ने दुर्ग पर कब्जा कर लिया।

अंग्रेजों के समय में जनजाति समाज ने प्राय: हर क्षेत्र-प्रांतों में स्वतंत्रता के लिए सबसे पहले संघर्ष किया। स्वतंत्रता के संघर्ष में शायद सर्व प्रथम फांसी के तख्ते पर चढ़कर आत्माहुति देने वाले देशभक्त संथाल वीर तिलका मांझी थे। यह 1780 का दशक था। अनेक स्थानों पर ऐसे युध्द हुए। वर्ष 1857 के स्वतंत्रता के लिए हुए भारतीय महायुद्ध में भी जनजाति समाज का योगदान व्यापक क्षेत्र में और बहुत बड़ा था। उड़ीसा के सुरेंद्र साय, छत्तीसगढ़ के वीर नारायण, मध्यप्रदेश के शंकरशाह - रघुनाथशाह - फूलकुंवरदेवी, विदर्भ के वीर शेड़माके आदि ने इस महासंग्राम में अपूर्व योगदान दिया जो राजघराने के थे अथवा जागीरदार थे। तेलंगाना के आदिलाबाद जिले के रामजी गोंड का संघर्ष सबसे अद्‌भुत रहा। सामान्य गोंड परिवार के सदस्य रहते हुए भी युवावस्था में निर्मलनगर क्षेत्र में संगठित प्रयास किया। यह पूरा क्षेत्र दो-ढाई वर्ष स्वतंत्र रहा जो सबसे लंबी अवधि का रहा। एक-एक बार अंग्रेजों और निजाम की सेना को हराया था। अंत में संघर्ष हुआ उसमें लगभग एक हजार सैनिक और नागरिक पकड़ लिये गये और सभी को फांसी दे दी गई। उसके बाद भी वनवासी क्षेत्रों में स्वतंत्रता की अग्नि धधकती रही। इसमें झारखण्ड के गुमला-लोहारदगा क्षेत्र के जतरा भगत का आन्दोलन अनूठा था। ब्रिटिश शासन काल में भारत के प्रथम अहिंसक असहकार का यह अंदोलन 1910 के दशक में किया गया था। झारखंड के रामगढ़ में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। तब महात्मा गांधीजी ने इन 'टाना भगतों' को आमंत्रित किया था और उनका सत्कार किया था। वैसे ही 1942 के आंदोलन में भी वनवासियों का पूरा सहयोग रहा। झारखंड के गोड्डा में जो प्रदर्शन हुआ था उसमें एक ही स्थान पर पुलिस की गोलियों से पचास व्यक्ति हुतात्मा हुए जिनमें प्राय: सभी वनवासी थे। इस आंदोलन में एक स्थान पर इतनी बड़ी संख्या में शहीद कहीं भी नहीं हुए। उड़ीसा के लक्ष्मण नायक ने 1942 के आंदोलन में सहभाग किया था अत: उसको फांसी पर चढ़ा दिया गया। भारत के सभी वनवासी क्षेत्रों में देश की स्वतंत्रता, धर्म-संस्कृति की रक्षा के लिए अंग्रेजों के कालखंड में सहस्रों वनवासियों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी।

हम देख सकते हैं कि अत्यंत पुराने कालखंड से लेकर अब तक वनवासी समाज शेष समाज के साथ, अभिन्न रुप से, जुड़कर किस प्रकार से अपना योगदान देता रहा है। परंतु सांस्कृतिक और धार्मिक (स्मरण रहे, सांप्रदायिक न समझा जाए) रुप से भी वनवासी समाज ऐसा ही जुड़ा हुआ है क्या? अब थोड़े से उदाहरण देकर इसको स्पष्ट करना होगा।

उड़ीशा का सर्वाधिक मान्यता वाला क्षेत्र है जगन्नाथपुरी महाधाम। मंदिर में विराजमान है भगवान जगन्नाथ की काष्ठ-प्रतिमा। बारह वर्ष में विग्रह को बदला जाता है। मान्यता और दृष्टांतानुसार विशिष्ट वृक्ष को काटकर

उससे प्रतिमा बनाई जाती है। सारा कार्य लंबे विधि-विधान के साथ होता है। यह लकड़ी वनवासी गांवों में से होते हुए समारोह के साथ लाई जाती है। विग्रह में प्राण की प्रतिष्ठा-विधि में क्षेत्र के सवरा (सौरा या शबर) जनजाति व्यक्ति का मुख्य रुप से सहभाग रहता है और वह प्रथम आरती उतारता है। सामाजिक जुड़ाव का यह परंपरागत कार्यक्रम सैकड़ों वर्षों से हो रहा है। 'जगन्नाथ का भात, पूछो न जात-पात' यह कहावत सभी लोग जानते हैं। एक पंक्ति में बैठकर सभी जाति के लोग यहां का महाप्रसाद प्रतिदिन पाते हैं। जाति पूछना गलत माना जाता है।

मध्यप्रदेश के नर्मदा नदी के किनारे पर ओंकारेश्वर का पवित्र स्थान है जहां पर ज्योतिर्लिंग है। संपूर्ण भारत से तीर्थयात्री यहां पर सैकड़ों वर्षों से यात्रा के निमित्त आते हैं। महाराष्ट्र कोंकण प्रांत के गोडसे भडजी 1856-58 के दौरान भारत की तीर्थयात्रा कर रहे थे। इस पर आपने मराठी में प्रवास-वर्णन की पुस्तक लिखी। वे ओंकरेश्वर गए। भगवान के मंदिर में दर्शन किए। यह मान्यता थी कि भील राजा के भी दर्शन किए बगैर यात्रा का फल नहीं मिलता अत: ज.जा. भील राजा के भी दर्शन किए। संपूर्ण भारत इस ढंग से राजा से जुड़ा हुआ था। राजस्थान के डुंगरपुर में 'ऋषभदेव' तीर्थस्थान है। विग्रह काले रंग का है। यह विग्रह जैनों के लिए आदि तीर्थंकर ऋषभदेव, वहां के जनजाति समाज के लिए कालुदेव और शेष समाज के लिए भगवान हैं। अपने-अपने पर्व पर भील और शेष समाज उत्सव मनाते रहे हैं। तीर्थयात्रा करते हैं। कुछ वर्ष पहले तक यह विशेष विवाद के बगैर, शांतिपूर्ण ढंग से सब हो जाता रहा। परंतु 'युग' बदल गया है। तथाकथित सेकुलर-वादियों की कृपा (?) के कारण, जिनके कुप्रचार या कहो कि अपप्रचार के कारण अंध-संप्रदायिक कट्टरवाद बढ़ गया है, इसका बोलबाल हो रहा है। विवाद बढ़ता गया। आज वह पारंपारिक प्रथा समाप्त हो गई है। परस्पर का विश्वास और सद्भाव कैसे टिकेगा? हां, कुछ विवाद था तो उसका हल बातचीत के माध्यम से आ सकता था जो असहिष्णु वतावरण के कारण नहीं हो सका। पुराने समादरभाव की परंपरा का अनुपालन चलाते रहना अच्छा ही रहता। 'एकं सत् विप्रा: बहुधा वदंति' इस वेद वाक्य का, जैनों के अनेकांतवाद या स्यात्वाद का प्रत्यक्ष प्रमाण यहां पर दिखता रहता। हमारी संस्कृति समृद्ध होती। राजस्थान का ही श्रीनाथजी का पवित्र क्षेत्र भी ऐसी झलक प्रस्तुत करता है।

दीपावली के दूसरे दिन यहां पर 'अन्नकूटोत्सव' होता है। अनेकानेक प्रकार की शाकाहारी खाद्य सामग्रियां भगवान को प्रसादी के रुप में अर्पण की जाती है। मंदिर में अचानक भीलों का प्रवेश हो जाता है और वे प्रसाद को 'लूटते' हैं। खाते हुए वे चले जाते हैं। यह 'पवित्र विधि' हो जाने के बाद ही उपस्थित भक्तों-यात्रियों को प्रसाद का वितरण होता है। यह भी सैकड़ों वर्षों की परंपरा है। यह प्रसाद 'जूठन' नहीं माना जाता। है न आश्चर्य की बात। मणिपुर में एक धार्मिक उत्सव होता है 'लाई हरोबा'। मैतेई लोगों का है यह उत्सव जो नैष्ठिक वैष्णव होते हैं। वर्षा के प्रारंभिक दिनों में यह उत्सव उत्साह के साथ मनाया जाता है। दिनभर का काम करने के बाद सभी लोग निर्धारित मंदिर के प्रांगण में जमा होते हैं। मंदिर के सामने परंपरागत लोक (धार्मिक) नृत्य 'पहाड़ी' लोग करते हैं जिनको विशेष रुप से निमंत्रित किया जाता है। समाज की मान्यता है कि 'पहाड़ी' लोगों का नृत्य यदि इस उत्सव में नहीं हुआ तो 'मेघराजा' नाराज हो जाएंगे। फसल होगी नहीं, बर्बाद होगी, और संपूर्ण वर्ष दुख-कष्टों में बीतेगा। वनवासी और शेष समाज के जुड़ाव के लिए यह कितना हृदय पर्व है।

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से वनवासी एवं शेष भारतीयों का आत्यांतिक जुड़ाव है। ❑

जशपुर यात्रा के संस्मरण

- बीना जाजोदिया

मैं पूर्वांचल कल्याण आश्रम के साथ विगत कई सालों से जुड़ी हुई हूँ और इस संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने का मुझे अनुभव भी प्राप्त हुआ है। परन्तु इस बार आयोजित कार्यक्रम के संदर्भ में यात्रा के दौरान जो मुझे अनुभव प्राप्त हुआ था वह अन्य अनुभवों की तुलना में महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक भूमिका निभाता है। जब मैं कार्यस्थल झारखण्ड स्थित रांची पहुँची तो वहाँ के स्थानीय लोगों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कल्याण आश्रम के एक केन्द्र में पहुँचकर हमने अपने को तरोताजा किया। वहीं एक कक्ष में बच्चों की कक्षाएं चल रही थी । कुछ शब्द मेरे कानों में पड़े और मैं मूर्तिवत वहीं खड़ी सुनती रही। समझ ही नहीं पाई यह कौन सी क्लास है ऐसा लगा कि शिक्षक महोदय से निवेदन करूँ वे विस्तार से इस कक्षा के बारे में हमारे कोलकाता में आकर भी सबको बतलाएं। मुझे लगा कि मैं शहर में व्यर्थ ही इतने रुपये खर्च कर कभी मैनेजमेंट गुरु की क्लास तो कभी मोटिवेशन की तो कभी मेडिटेशन की क्लास में घूम रही हूँ। यहाँ तो सभी कक्षाएं एक साथ हो रही हैं। शिक्षक महोदय श्री प्रशान्त श्रीवास्तव आईआईएम बंगलौर से हैं और यहाँ सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी करवा रहे हैं। कुछ देर बाद छात्र-छात्राओं से परिचय करवाया गया। कुछ आईटी इंजीनियर थे कुछ विद्यार्थियों ने हिस्ट्री एवं जेयोग्रॉफी में आनर्स किया था, कई एम ए पास भी थे। मुझे यह देखकर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि कल्याण आश्रम शिक्षा के विकास एवं संवर्धन के लिए इतना बड़ा योगदान कर रहा है। दो संस्थानों का भ्रमण कर हम जशपुर नगर पहुँचे। अगले दो दिनों तक कई सुदूर गाँवों का भ्रमण किया। कई विद्यालय छात्रावास एवं स्वावलम्बी संस्थानों को देखने-समझने का सौभाग्य मिला। बच्चों में अनुशासन एवं देशभक्ति देख हृदय गद्‌गद् हो गया। बच्चों का सामान्य ज्ञान तो शहरी बच्चों से भी अधिक था। उनके संस्कार देखकर ऐसा लगा कि भारत की संस्कृति सिर्फ ग्रामों में ही बसती है। मुझे अपने आप पर एवं शहरी शिक्षा पर बेहद संकोच अनुभव हो रहा था। मुझे पुराना वाकया याद आ रहा है जब हम 10 साल पहले अयोध्या पहाड़ की यात्रा पर गये थे वहाँ संध्या समय गांव वालों के साथ मिलने का कार्यक्रम था। एक वनवासी ने बताया था कि दो दिन पहले एक व्यक्ति के मृत्यु का कारण सिर्फ डायरिया ही था। गर्भवती महिलाओं की स्थिति तो और भी भयावह थी। आधी संतानें तो जीवन ही देख नहीं पाती थी। छः माह से अधिक का समय भुट्टे को उबालकर उसका पानी पीकर बसर करना पड़ता है। ऐसी कई घटनाओं ने मेरे हृदय को झकझोर दिया। जब मैं यहाँ शहरी लोगों की वैभवशाली जीवन प्रणाली देखती तो मेरा मन अत्यधिक शंकित हो उठता। मैं समझ नहीं पाती कि ये बातें करने वाले कैसे इतना विलासितापूर्ण जीवन जी पाते हैं? मुझे ऐसा लगा कि अन्य संस्थाओं की तरह ये संस्था भी हाथी के दांत की तरह ही है।

पर आज मेरा मस्तिष्क परिपक्व हो गया। जशपुर नगर की यात्रा के दौरान कल्याण आश्रम के काम का बहुत सुन्दर परिणाम देखा। सबसे ज्यादा प्रभावित तो मैं कृपाजी से मिलकर हुई। उनको देख मेरे मस्तिष्क की सारी जटिलतायें समाप्त हो गई। उनका इतना सादगीपूर्ण जीवन, इतनी ऊर्जा, इतनी कार्य तत्परता, इतना त्याग सब देखकर मैं अचंभित रह गई। उनके एक पुत्र एवं पुत्रवधू डॉक्टर हैं और दूसरा पुत्र इंजीनियर है फिर भी वे अपना विलासिता का जीवन छोड़ एक कर्मयोगी का जीवन जीते हैं। अब मेरे मन में कल्याण आश्रम के प्रति विशेष अनुराग पैदा हो गया। शहरी कार्यकर्ताओं के प्रति जो भाव थे वो पूर्णतः बदल गए। मैंने महसूस किया कि एक वृक्ष के पूर्ण विकास के लिए मूल एवं पत्र दोनों ही अनिवार्य

हैं। मूल अपना बलिदान करता है तो पत्ते भोजन बनाने में अपनी भूमिका निभाते हैं। ठीक इसी तरह कल्याण आश्रम के मूल में भी कई-कई कर्मयोगी अपना जीवन अर्पित कर रहे हैं। शहरी कार्यकर्ता संगठन को सुदृढ़ कर एवं संसाधन का संचय कर बेहद महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इन दोनों से मिलकर ही कल्याण आश्रम सुचारू रूप से अपना कार्य कर सकता है। एक जड़ एवं दूसरे पत्ते। किसी के भी अभाव में यह वट वृक्ष सूख जाता। मेरा मन आज पूर्ण शान्त है। कल्याण आश्रम के प्रति एक सम्मान का भाव जग गया और हृदय से हुंकार हुई कि जितना बन पड़ेगा मैं भी अपना योगदान देने को तत्पर रहूँगी। ❑

श्रीमती माधवी जोशी के साथ महानगर महिला कार्यकर्ताओं की बैठक

अखिल भारतीय महिला प्रमुख श्रीमती माधवी जोशी से जब हम कल्याण आश्रम की कार्यकर्ता बहनें मिली तो सभी उत्सुक थी, उनके संस्मरण एवं अनुभव जानने के लिए। कोलकाता-हावड़ा संभाग महिला प्रमुख श्रीमती उषा अग्रवाल के घर हमारी औपचारिक बैठक हुई। माधवी जी से कार्य क्षेत्र के प्रेरणादायी संस्मरण सुनकर सब बहनों में नवीन प्रेरणा का संचार हुआ। उन्होंने जिला एवं राज्यस्तर की बैठकों में अधिक से अधिक संख्या में आने के लिए हम सभी को प्रेरित किया। महिला संरक्षिका श्रीमती दमयंती बियानी ने उन्हें कार्यकर्ताओं द्वारा निर्मित दीपकों का सेट भेंट स्वरूप प्रदान किया। ❑

MEMORABLE TRIP TO BALARAMPUR

- Naman Dalmia

The three days of this beautiful trip to Balarampur has changed my way of looking at life considerably. I never thought that this trip is going to be so valuable to me. The trip started with our (The people going to Balarampur) meeting at station at 11pm. Almost everyone was a stranger to me but as we started talking to each other, day by day our bond kept getting stronger, so strong that it was difficult to bear the parting, because we had become like family, a family where all its members might be far apart, but are connected by heart and have the same way of thinking. We saw many interesting things in Balarampur which I shall like to share in the following paragraphs.

On the first day, after having tasty breakfast and getting ready, we visited a nearby village. Over there we saw beautiful mud houses decorated with Gobar and were very cool from inside making it suitable to live in the harsh climates in summer. We had food in one of the villagers house. The different type of rice and dal which they served was yummy. We also had the privilege of seeing their beautiful dance. It was a nice time, spending time with the villagers and telling them about the new schemes of Government and hearing about their grievances, particularly because of the negligence of Government towards them. The way they invited us and showed us respect was appealing. We wore them friendship bands made from beads and made them colour few drawings from crayons. We returned to the Kalyan Ashram Hostel by evening. We played games with the people staying there. It was fun. Then we talked to our parents over phone, had dinner and went to the room where we all said prayer and told everyone how our experience was.

The second day was a bit tiring. We woke up early morning. Got ready and after breakfast, left for Ayodhya Hill. Over there we saw waterfall, upper dam, lower dam and a few other attractive places. Then we went to a temple. After that we went to another hostel of Kalyan ashram nearby where we had snacks and saw teachers teaching students. After that, we went from where we had left, did what we did last day and slept.

The next day, we did Archery with those people who were going to Mumbai for the All India Kalyan Ashram Archery Competition after few days. It was fun doing it. Then we proceeded to a different village, where we taught the children how to make different things from paper. We even went to Kana hills where we tried to climb the hill which was difficult due to its high rocks. We didn't want to take any risk hence returned from half way. Then we went to hostel, packed our suitcase and sat together and talked about our experience and gave suggestion as to how we can improve the lives of these people and thus of our country as whole. After that we went to station to board our train and left for Kolkata taking back so many memories.These three days had taught me how to be self-reliant and to be happy with whatever I get. I am determined to do whatever I can for this good cause. It was a memorable trip for me. ❑

मकर संक्रन्ति : एक वृहद् अभियान

- शकुन्तला अग्रवाल

मकर संक्रन्ति का पर्व यानि उल्लसित जीवन के संचार का पर्व ! भास्कर भगवान का उत्तरायण में आगमन, धरा पर नवजीवन का प्रस्फुटन ऐसा लगता है अपने हृदय को पुन: संचारित करने का एक सुअवसर आ गया है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर का एक विशेष उपक्रम है मकर संक्रन्ति संग्रह। दान या दायित्व बिना जीवन कैसा? समाज के प्रति दायित्व निभाने का मानव का एक स्वभाविक संस्कार है जिसे प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महानगर कोलकाता-हावड़ा के लोगों ने बखूबी निभाया। इस वर्ष मकर संक्रान्ति के दिन कार्यकर्ताओं द्वारा लगभग 90 जगहों पर कैम्प लगाकर सामग्री एकत्रित की गई। महानगर का व्यापक समाज वनवासी की आवश्यकता को समझने व स्वीकारने लगा है। वे स्वयं ही वनवासी की आवश्यकता पूछते हैं एवं उसी अनुरूप धनराशि या वस्तु उपलब्ध कराते हैं।

संगठन द्वारा वनवासी समाज के उपयोगी सामान की सूचि पत्रकों द्वारा उनके पास पहुँचने लगी है और उसी अनुसार बड़ी मात्रा में सामान आता है जो बंगाल सहित उत्तर पूर्व के सभी प्रान्तों एवं अण्डमान निकोबार सहित देश भर के वनवासी बंधुओं तक पहुंचने लगा है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रचुर मात्रा में वनबंधुओं के जीवन-निर्वाह को सुगम बनाने वाली सामग्री एवं धनराशि संग्रहित हो जाती है। हजारों घरों से संग्रहित सामान को अलग-अलग प्रांतों की आवश्यकतानुसार भेजना बहुत कौशल एवं श्रम का काम रहता है। अवनी महिला समिति की कार्यकर्ता निधि तुलस्यान ने अपना अनुभव इस प्रकार लिख भेजा 'मकरसक्रंति के पावन अवसर पर मुझे पहली बार पी एस मैगनाम काम्प्लेक्स में पूर्वांचल कल्याण आश्रम के बैनर के नीचे कैंप लगाने का अवसर मिला। मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ । मुझे एहसास हुआ लोग पूर्वांचल कल्याण आश्रम के नाम से परिचित थे। इसमें खुले हस्त से लोगों ने अपने सामर्थ्य अनुसार अपना सहयोग दिया और मेरे इससे जुड़ने और कार्य करने को सराहा। कुछ महिलाओं ने इससे जुड़ने में अपनी रूचि जताई और अपने नंबर भी मुझे दिए।'

अधिकांश कार्य महिला इकाई जिम्मेदारी से निभाती है। संक्रान्ति के बाद प्राय: दो महीने तक सामग्री भेजने का कार्य अनवरत चलता है। वनवासी समाज के लिए जीवनोपयोगी वस्तुएं यथा शिक्षण सामग्री, कंबल, लालटेन, दरी, मच्छरदानी, टॉर्च, छाते, वस्त्र आदि उनके अभावग्रस्त जीवन में एक सुखद एहसास का अनुभव कराते हैं।

संक्रान्ति संग्रह सिर्फ साधन संग्रह का उपक्रम ही नहीं है बल्कि इससे संगठन को भी बल मिलता है। वनवासी कल्याण आश्रम का संकल्प है कि शिक्षा, औषधि को उनके द्वार तक पहुँचाकर उनमें अशिक्षा, रोग, और बेरोजगारी दूर करना। साथ ही दूरस्थ वनवासी समाज के पास शहरवासियों का श्रम एवं स्नेहभरा सहयोग पहुंचता है तो इससे राष्ट्र की भावनात्मक एकता सहज ही सधती है। यही है सम्यक् क्रान्ति। यही है कल्याण आश्रम के कार्य का अपेक्षित परिणाम। धार्मिक परम्पराओं को कार्यकर्ताओं ने समाजहित में परिवर्तित कर एक अकल्पनीय कार्य किया है। कल्याण आश्रम के 65 वर्षों के अथक एवं अनवरत प्रयासों से वनवासी जाग रहा है, अपनी धर्म-संस्कृति को बचाने में सफल हो पा रहा है। संक्षेप में महानगर के कार्यकर्ताओं ने मकर संक्रान्ति को एक अभियान के रूप में आगे बढ़ाया है। ❑

अमृत वचन

इस दुनिया में जो कुछ हम अर्जित करते हैं उससे नहीं अपितु जो कुछ त्याग करते हैं, उससे समृद्ध बनते हैं।

-हेंजरी वार्ड बीचर

जिन्दगी तो अपने दम पर ही जी जाती है, दूसरों के कंधों पर तो सिर्फ जनाजे उठाए जाते हैं।

-भगत सिंह

स्व. भास्कर राव का पुण्य स्मरण

- कृपाप्रसाद सिंह

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के द्वितीय संगठन मंत्री माननीय के. भास्कर राव की पुण्यतिथि 12 जनवरी के अवसर पर लोहरदगा व जशपुर आश्रम में उनको विनम्र श्रद्धांजलि दी गई। आश्रम के उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद सिंह ने बताया कि 1984 में भास्कर राव अखिल भारतीय सह-संगठन मंत्री के रूप में कल्याण आश्रम में शामिल हुए। उन्होंने 1985 में संगठन मंत्री का महत्वपूर्ण दायित्व संभाला। सन् 2000 तक वे कल्याण आश्रम के लगातार संगठन मंत्री रहे। भास्कर राव जी के कार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि प्रत्येक वर्ष सेवा प्रकल्प एवं पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की संख्या अनवरत बढ़ती रही। उनके संगठन मंत्री बनते ही तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय प्रशिक्षण केन्द्र के शिलान्यास हेतु दादरा नगर हवेली में पधारे। मलखम्भ का खेल देख कर राष्ट्रपति बहुत प्रभावित हुये ओर उन्होंने कहा कि ऐसे खेल ग्रामीण क्षेत्रों में चलने से गांव के लोगों का मनोबल ऊपर उठता है। इसलिये सामाजिक संस्थाओं को चाहिये कि इसी से जुड़े हुये कबड्डी, खो-खो व तीरंदाजी के खेल केन्द्र अधिकाधिक स्थानों पर चलने चाहिये। माननीय भास्कर राव जी लगातार 30 वर्षों तक केरल के प्रान्त प्रचारक रहे और देश भर में कार्य के लिये कार्यकर्ता भेजते रहते थे। माननीय भास्करराव पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की खूब चिन्ता करते थे। अपने प्रवास के क्रम में सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ताओं तक पहुँचते थे व रात्रि विश्राम परिवारों में ही करते थे। अपने लिये विशेष प्रकार के भोजन व स्नानागार तथा शौचालय का आग्रह बिल्कुल नहीं करते थे इसकी अनुभूति जब वो अरुणाचल और नागालैण्ड जैसे प्रदेशों का प्रवास करते थे तब कार्यकर्ताओं को होती थी झारखण्ड के सोनवा स्टेशन से 8 कि.मी. अन्दर मोरेनसिंह पूर्ति तत्कालीन उपाध्यक्ष के घर पर प्रान्तीय सम्मेलन में 3 दिन रहकर उन्होनें यह संदेश सभी कार्यकर्ताओं को दिया। ❑

गोसाबा छात्रावास का भ्रमण

- सीमा रस्तोगी

हमलोग पहली बार सुन्दरवन के गोसाबा छात्रावास का दर्शन करने गये। हम पाँच लोग थे। नाव में जाना, गंगा पार करना, फटफटिया से जाना। यह सब अद्‌भुत था। छात्रावास में जब छात्राओं से मिले तो लगा कि मैं अपने बच्चों से मिल रही हूँ। उनमें भी एक खुशी का संचार था और आगे पढ़ने की, आगे बढ़ने की एक तरंग थी। सबसे बड़ी छात्रा ने दसवीं की परीक्षा दी है और सबसे छोटी दूसरी कक्षा में पढ़ रही है। हमारी पूर्णकालीन महिला कार्यकर्ता रेवती मण्डल छात्राओं की देखरेख पूर्ण मनोयोग से करते हुए एक माँ का फर्ज अदा कर रही हैं।

छात्राओं ने वैदिक मंत्र, प्रार्थना एवं भजन सुनाए। उनका सुर ताल मन को मोहनेवाला था। संध्या तक हमारी वापसी थी। ऐसा लग रहा था मानों मेरी आत्मा वहीं रम रही है, मात्र देह लिए जा रही हूँ। आज भी अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं एवं परिजनों के सम्मुख गोसाबा परिभ्रमण के संस्मरण बांटने का लोभ संवरण नहीं कर पाती हूँ। ❑

छात्रावास में अध्ययनरत बालिकाएँ

परस्पर प्रेम और विश्वास से वनवासी और शहरवासी के बीच की दूरियां मिटाये : राज्यपाल

''नयी कौरव युक्तियां नित दिखती हैं, नई गीता के लिए अब नया युद्ध चाहिए। इस देश का चिंतनशील व्यक्ति सोचता है कि सीता हरण के समय जटायु ने रावण का विरोध क्यों किया? हनुमान ने श्रीराम का सहयोग क्यों किया? इसके पीछे बहुत गहरा भाव और शक्ति है। वह शक्ति पारस्परिक प्रेम और विश्वास की है। जटायु सोचता है कि जीव, जन्तु व मनुष्य सभी हमारे संस्कृति के अंग है। इसलिए वह रावण के अन्याय का विरोध करता है। राम ने वनवासियों को अन्त:करण का प्रेम दिया इसलिए हनुमान ने उन्हें सहयोग दिया। प्रेम और विश्वास दूरियों को मिटाता है। प्राचीन समय में वनवासी अपनी लोकसंस्कृति और परंपरा के अनुरुप जीते थे। बाद में मुगलों और अंग्रेजों के समय उन्हें गलत रुप से प्रस्तुत किया गया। उन्हें असभ्य और पिछड़ा घोषित किया गया। लेकिन यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि पूर्वांचल कल्याण आश्रम जैसी संस्थायें वनवासियों को मुख्यधारा में लाने के लिए, उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए रचनात्मक काम कर रही हैं।'' उक्त उद्‌गार पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी ने 18 दिसम्बर, रविवार को पूर्वांचल कल्याण आश्रम के 37वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर कलामंदिर में आयोजित भव्य कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। अपनी धीरोदात्त वाणी से प्रेक्षागृह में उपस्थित विशाल जनसमुदाय का वनवासी क्षेत्रों में चल रही माओवादी, नक्सलवादी, एवं राष्ट्रविरोधी गतिविधियों की ओर ध्यानाकर्षण किया। उन्होंने कहा कि समाज के पिछड़े एवं उपेक्षित वनवासी समाज को सामाजिक उत्थान से जोड़ने के लिए जिस अर्जुन रूपी ऊर्जा की आवश्यकता है, कल्याण आश्रम वह ऊर्जा प्रदान करता है।

उन्होंने कहा कि वनवासी वीरों के बलिदान और संघर्ष की अनगिनत गाथाएं भारत के स्वर्णिम इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। उन्होंने इस बात पर खेद जताया कि विकास की दौड़ में पश्चिमी सभ्यता ने हमें हमारी संस्कृति से कुछ इस तरह से काटा कि वनवासी समाज उपेक्षित हो गया जिस कारण आजादी के इतने दशकों के बाद भी 11 करोड़ का यह वनवासी समाज बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। वनवासियों की उन्नति के लिए और उन्हें विकास के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए उनमें चेतना जागृत करना आवश्यक है और कल्याण आश्रम उस चेतना को जागृत करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। मुख्य अतिथि महेश चंद्र साह ने भी कल्याण आश्रम द्वारा वनवासी समाज के उत्थान के लिए किये जा रहे कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम का शुभारंभ राज्यपाल द्वारा भगवान श्रीराम की छवि पर पुष्पार्पण के साथ हुआ। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल के कर कमलों से भारत में जनजातियों की स्थिति, समस्या एवं समाधान विषय पर आधारित जनजाति नीति दृष्टिपत्र का भी लोकार्पण किया गया। उद्‌बोधन गीत प्रस्तुत किया उत्तर हावड़ा महिला समिति की बहनों ने एवं संस्था का वृत्त रखा कोलकाता महानगर महिला समिति की सहमंत्री श्रीमती शशी अग्रवाल ने। प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी कल्याण भारती त्रैमासिक पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण महामहिम राज्यपाल महोदय एवं मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। इस वर्ष का विशेषांक वनवासी शिक्षा पर केंद्रित था। वंदेमातरम् गीत प्रस्तुत किया श्री शेखर लाखोटिया ने। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत राधिका क्रियेशन्स की प्रस्तुति स्वामी विवेकानंद नाटक का मंचन किया गया। श्रीमती शुभांगी भड़भड़े द्वारा लिखित इस नाटक का कुशल निर्देशन किया सारिका पेंडसे ने।

इस अवसर पर पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षिण बंग प्रांत के अध्यक्ष श्री रंजीत भट्टाचार्य, कोलकाता महानगर के अध्यक्ष श्री जितेंद्र चौधरी, हावड़ा महानगर के अध्यक्ष श्री शंकरलाल हकिम, कोलकाता महानगर महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला बागड़ी भी मंचस्थ रही। प्रेक्षागृह में सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। ❑

पटना में केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल की बैठक

- कृपाप्रसाद सिंह

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल व प्रान्तीय संगठन मंत्री, प्रान्तीय मंत्रियों व अखिल भारतीय आयाम प्रमुखों की बैठक 2 से 9 मार्च 2017 को राजेन्द्र नगर, पटना में सम्पन्न हुई। बैठक की शुरूआत भगवान राम, भारत माता व कल्याण आश्रम के संस्थापक श्रद्धेय बाला साहब देशपाण्डे के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर श्री जगदेव राम उरांव अध्यक्ष, श्री कृपा प्रसाद सिंह, श्रीमती निलिमा पट्टे उपाध्यक्ष व महामंत्री श्री चन्द्रकान्त दवे ने किया। इस अवसर पर कल्याण आश्रम के पालक अधिकारी मा. सुहास हिरेमठ की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यकारी मण्डल व प्रतिनिधि मण्डल दोनों बैठकों में गत कार्यवाही का वाचन व महामंत्री प्रतिवेदन श्री चन्द्रकान्त दवे ने सबके समक्ष प्रस्तुत किये। श्री सोमया जुलु, श्री अतुल जोग ने सम्पन्न कार्यक्रमों की जानकारी कार्यकारी मण्डल को दी। आगामी कार्यक्रमों की चर्चा करते हुये दोनों महानुभावों ने आश्रम के विभिन्न आयामों की जानकारी तिथियों समेत सबको दी यथा अप्रैल अन्त में खेलकूद प्रशिक्षण हरिद्वार, शिक्षा विभाग कार्यकर्ता प्रशिक्षण हैदराबाद, छात्रावास प्रमुख कार्यकर्ता प्रशिक्षण भोपाल, हितरक्षा सतना, श्रद्धाजागरण कटनी व महिला पूर्णकालीन कार्यकर्ता प्रशिक्षण जशपुर में होने की जानकारी दी।

आगामी कार्यकारी मण्डल व केन्द्रीय टोली बैठक 10, 11,12 जून को पंढरपुर, महाराष्ट्र में सम्पन्न होगी।

अखिल भारतीय कार्यकर्ता सम्मेलन व कार्यकारी मण्डल की बैठक 15 से 20 सितम्बर तक को छत्तीसगढ़ में सम्पन्न होगी। अखिल भारतीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता बैठक तथा ग्राम विकास से जुड़े कार्यकर्त्ताओं की बैठक अगस्त के अन्तिम सप्ताह में सम्पन्न होगी।

महामंत्री श्री चन्द्रकान्त दवे ने 2017-18 का बजट सबके समक्ष प्रस्तुत किया व सर्वमतेन आगामी सत्र के अंकेक्षण हेतु श्री के. के. मानकेश्वर एण्ड कम्पनी, रायुपर को अंकेक्षण के लिये नियुक्त किया गया। जिन महापुरुषों को सभा में श्रद्धाजंलि अर्पित की गई उसमें श्री रूसनाथ भगत-शिक्षाविद् व सामाजिक कार्यकर्ता जशपुर, श्री चमनलाल चोपड़– कल्याण आश्रम सोलन के भूमि दाता, प्रो. गांगुमई कामेइ-मणिपुर विश्वविद्यालय व मणिपुर सरकार के पूर्व मंत्री, श्री रतन क्रा- डिफू (असम) के सामाजिक कार्यकर्ता, श्री रामभाउ हल्देकर आन्ध्र व श्री जयदेव जी कर्नाटक श्री हरिशंकर साहू वनवासी कल्याण केन्द्र झारखण्ड व एडवोकेट श्री आर. के. वड़े भोपाल प्रमुख रूप से रहे। जशपुर के कार्यकर्ता व असम प्रान्त के वर्तमान संगठन मंत्री श्री मोहन राम भगत की पूज्य माताजी को भी श्रद्धाजंलि अर्पित की गई। कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुये पालक अधिकारी व अखिल भारतीय सेवा प्रमुख मा. सुहास हिरेमठ ने कार्यकर्ताओं को टोली बनाकर काम करने की सलाह दी। किसी समस्या की समाधान के लिये सामूहिक रूप से काम करना संगठन में सदैव हितकर रहता है, आपसी सद्भाव व कार्यकर्ता की सादगी तथा मधुर स्वभाव संगठन के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण बताया। बैठक के समापन में कल्याण आश्रम के अध्यक्ष श्री जगदेव राम उरांव ने सभी

जनजातियों तक व सभी निर्जन ग्रामों तक कार्यकर्ताओं को पहुंचने की अपील की। छोटे-छोटे सेवा प्रकल्प तथा ग्राम समितियों के गठन से कल्याण आश्रम का उद्देश्य पूरा होगा ऐसा निवेदन भी उन्होंने किया। कल्याण आश्रम के छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं की चिन्ता का आग्रह भी अध्यक्ष महोदय ने किया। प्रेस को जानकारी देते हुये आश्रम उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद सिंह ने बताया कि अभी देश भर में सेवा प्रकल्पों की संख्या बढ़कर 20970 हो गई है। ये प्रकल्प देश के 14337 स्थानों पर हैं। देश में 50554 ग्रामों का सम्पर्क आश्रम के कार्यकर्त्ताओं ने किया है। 13403 ग्रामों में तथा 414 नगरों में समितियां भी बनाई हैं। 1665 महिला समितियां भी गांवों में कार्यरत हैं। आश्रम के छात्रों की संख्या 138220 है तथा आर्थिक विकास के लाभान्वितों की संख्या 91000 से ऊपर हो गई है। इस वर्ष 1287696 रोगियों की चिकित्सा वनवासी क्षेत्रों में आश्रम के कार्यकर्ताओं के द्वारा की गई है।

कल्याण आश्रम के द्वारा प्रकाशित वनबन्धु पत्रिका के पाठकों की संख्या बढ़ाने का आग्रह देश भर के कार्यकर्ताओं से श्री प्रमोद पेठकर ने किया है। वनबन्धु का अब स्वतंत्र एकाउन्ट भी हो गया है। ज्ञातव्य हो कि वनवासी समाचारों की एक प्रभावी पत्रिका के रूप में वनबन्धु का विकास हो रहा है। श्री गिरीश कुबेर व श्री रमेश बाबू ने ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने के लिये सुझाव स्वरूप एक लिखित पुस्तिका बनाने का आग्रह भी कार्यकर्ताओं से किया है। ❑

शोकसंवाद

- पश्चिम बंगाल के पूर्व प्रांत श्रद्धाजागरण प्रमुख **मनोरंजन भट्टाचार्य जी** अब अपने बीच नहीं रहे। पश्चिम बंगाल के अपने पैतृक गाँव आसनसोल में 3 दिसम्बर 2016 को प्रात: उन्होंने अंतिम सांस ली।
- वर्षों तक पश्चिम बंगाल के पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में अपनी सेवाएं देने वाले श्री विश्वनाथ दत्त का विगत 14 दिसम्बर 2016 को देहावसान हो गया।
- पश्चिम बंग प्रांत के संगठन मंत्री श्री चक्रधर सोरेन की माताश्री श्रीमती सजनी सोरेन का गत 18 नवम्बर 2016 को निधन हो गया।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि। ❑

चिकित्सा शिविर

जनवरी महीने में श्री विवेक गोयल की देखरेख में पुरुलिया जिला के अयोध्या पहाड़ी में दो दिन का मेडिकल कैम्प सम्पन्न हुआ जिसमें 7 डॉक्टर व 19 कार्यकर्ता गये थे। पहले दिन 550 मरीजों की जांच हुई व दूसरे दिन 425 की।

बाद में 8 मरीजों के आँख का व कैटरेक्ट के ऑपरेशन के लिए उन्हें कोलकाता बुलाया गया। एक बालिका के आँख की मेजर सर्जरी हुई। सभी के ऑपरेशन एम. पी. बिड़ला नर्सिंग होम में करवाया गया। ज्ञातव्य है कि 30-40 दिनों के अन्तराल से कोलकाता के आसपास के गाँवों में पूर्वांचल कल्याण आश्रम नियमित रूप से मेडिकल कैम्पों का आयोजन करता रहता है। ❑

आगामी कार्यक्रम

लेकटाऊन महिला समिति द्वारा गोकुल बैंक्वेट में प्रदर्शनी सहबिक्री का आयोजन आगामी 16 से 18 जुलाई 2017 तक किया जायेगा। सभी की उपस्थिति प्रार्थित है।

प्रेरक प्रसंग

बचत गट के माध्यम से शराब की बिक्री बंद हुई

कर्नाटक के कारवार जिले के अंम्बिका नगर गाँव में गवली जनजाति के बीच कल्याण आश्रम के प्रयासों से बचत गट चल रहा है। यहां की एक महिला अपनी महिला कार्यकर्ता के पास आई और उसे अपनी दु:खद कहानी सुनाई। उसका देवर शराब पीकर उसकी पिटाई करता था। वह पुलिस थाने में चार-चार बार गई परन्तु पुलिस ने कोई ध्यान ही नहीं दिया। दो वर्ष पूर्व भी ऐसे ही एक महिला का पति उसे शराब पीकर मार रहा है, की फरियाद लेकर अपने छात्रावास आई और यह सुरक्षित स्थान है ऐसा मानकर वहाँ ही रही। यह सब देखते हुए वनवासी और गैर-वनवासी सभी महिलाओं को एकत्रित किया गया। हेतु था ग्रामसभा में इसके बारे में आवाज उठाना। 50 महिलाओं के प्रयास से 'शराब की बिक्री अपने ग्राम में बंद होनी चाहिए' की मांग ग्रामसभा में उठाई गई। साथ-साथ जो व्यक्ति शराब पीकर मारता है, उसके विरुद्ध पुलिस के पास फरियाद करने पर भी कुछ कारवाई नहीं की है- इस बात की नाराजगी जताई गई। ग्रामसभा में खलबली मच गई। समाचार माध्यमों के सामने घबराते-घबराते बंद करेंगे का आश्वासन दिया, परन्तु दो महीने तक कुछ भी नहीं हुआ। अब अपने कार्यकर्ताओं द्वारा दूसरे प्रयास शुरु हुए। एक राजनैतिक नेता से सम्पर्क किया गया। परिणामस्वरुप ए सी एफ को वहाँ आना पड़ा। उसने महिलाओं को बुलाया, इस सन्दर्भ में कल्याण आश्रम की अपनी कार्यकर्ता जो महिला नेतृत्व कर रही थी, उसे भी बुलाया गया। ग्राम समिति के सदस्य भी उपस्थित रहे। उन्होंने भी समस्या की गंभीरता बताई। ग्राम पंचायत की ओर से सभी दुकानों को नोटिस भेजा गया, शराब बिक्री बंद हुई और एक महीने तक पुलिसवालों ने सारी परिस्थिति पर नजर रखी। वर्तमान में शराब बिक्री बंद है। महिला जागृति के कारण यह परिवर्तन सम्भव हुआ और कल्याण आश्रम का बचत गट महिला शक्ति का माध्यम बना। ❑

प्रेरक उपलब्धि

थारु जनजाति की पहली महिला सब इंस्पेक्टर

कुमारी सुरभि राणा उत्तराखंड की थारु जनजाति की पहली महिला सब इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुई है। सुरभि उधमसिंह नगर में सितारगंज तहसील की निवासी है। उसने वनवासी कन्या छात्रावास रुद्रपुर से 12 वीं तक की पढ़ाई की। स्नातक के बाद पुलिस की परीक्षा पास की। सुरभि की इस उपलब्धि पर उसके पिता श्री रमेश राणा ने कल्याण आश्रम एवं रुद्रपुर छात्रावास की अधीक्षिका सुश्री वर्षा घरोटे के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की। कल्याण आश्रम के सभी सहयोगियों, कार्यकर्ताओं, समिति सद्स्यों के लिए यह उपलब्धि गौरव की बात है। कल्याण आश्रम परिवार की ओर से सुरभि को बधाई एवं शुभकामनाएँ। ❑

वनभोज

- ज्योति गुप्ता

29 जनवरी को हर साल की तरह इस साल भी हमारा वनभोज हुआ जो बहुत ही सफल रहा। वनभोजन मध्यमग्राम के 'गौरी विला' में हुआ। 125-150 लोग अपेक्षित थे पर 180 लोगों की संख्या हुई। कोलकाता व हावड़ा से लगभग समान उपस्थिति रही। नाश्ता व भोजन मनभावन था। चारों तरफ मनोरम दृश्य था। संजय गोयल व सुधा गोयल ने अच्छे-अच्छे खेल खिलाये जिनमें कुछ खेल बिल्कुल नये थे। अन्त में हाउजी खेल के बाद विजेताओं में पुरस्कार वितरण किया गया। कार्यकर्ता से अधिक मेहमानों की संख्या थी पर वनभोज बड़े ही सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। ❑

धर्मान्तरण करने वालों पर गिरी गाज

एक देशभक्त को प्रधानमंत्री बनाने का क्या फायदा होता है यह बात आपको इस खबर को जानकर मालूम हो जायेगी। भारत में धर्मांतरण के खिलाफ पीएम नरेंद्र मोदी की सरकार की कोशिश का एक बड़ा नतीजा सामने आया है। पूरी दुनिया में ईसाई धर्मांतरण कराने वाली सबसे बड़ी अमेरिकी एजेंसी **'कंपैशन'** ने भारत में अपना ऑफिस और सारे ऑपरेशन बंद करने का ऐलान कर दिया है।

''कंपैशन इंडिया'' नाम के एनजीओ के जरिये से ये एजेंसी भारत में बड़े पैमाने पर गरीबों और आदिवासियों को ईसाई बनाने में लगी थी। करीब 10 महीने पहले मोदी सरकार ने इस संस्था पर बिना इजाज़त विदेशी फंडिंग लेने के लिए रोक लगा दी थी। यानी हर बार फंडिंग लेने से पहले सरकार को उसका पूरा ब्यौरा देना होगा। प्रधानमंत्री बनते ही नरेंद्र मोदी ने देश में काम कर रहे तमाम एनजीओ का ऑडिट कराया जिसमें यह बात खुलकर सामने आई थी कि अमेरिकी एनजीओ **'कंपैशन'** भारत में सबसे ज्यादा अनुदान भेज रहा है और यह सारा पैसा भारत में हिंदुओं के ईसाई धर्मांतरण में लग रहा है।

भारत में पिछले 30 साल से 'कंपैशन इंडिया' धर्मांतरण में लगी हुई थी। यह प्रतिवर्ष भारत में 292 करोड़ रुपये विदेशों से लाती थी और इस फंड को 344 छोटे-बड़े एनजीओ में बाँटा जाता था। ये सभी एनजीओ देशविरोधी गतिविधियों में और धर्मांतरण में लिप्त पाए गए हैं।

ओबामा सरकार ने डाला था मोदी पर दबाव-

'कंपैशन इंडिया' ने अपने बयान में कहा है कि वो भारत में अपना कामकाज बंद कर रहा है क्योंकि फंडिंग के नए नियमों के चलते उसे पैसा मिलना नामुमकिन हो चुका है। पाठकों को बता दें कि 'कंपैशन इंडिया' के खिलाफ जांच और नए नियमों को लगाए जाने के कारण पिछले वर्ष ओबामा और मोदी सरकार के रिश्तों में भी मनमुटाव हो गया था जिसके बाद ओबामा सरकार के कई मंत्रियों और अधिकारियों ने भारत आकर मोदी सरकार पर इस बात के लिए दबाव डालने की कोशिश भी की थी कि 'कंपैशन इंडिया' के लिए दिक्कतें पैदा न की जाएं।

यहां तक कि 'कंपैशन इन्टरनेशनल' के वाइस प्रेसिडेंट स्टीफेन ओकले भी भारत आये थे और भारत के तमाम नेताओं और अफसरों से मुलाकात की थी। इस बारे में उन्होंने विदेश सचिव एस. जयशंकर से भी मुलाकात की थी लेकिन इस मुलाकात में सरकार की ओर से उन्हें एनजीओ द्वारा भारत में कराए जा रहे धर्मांतरण के सबूत दिखा दिए गए थे।

लाखों बच्चों को ईसाई धर्म के जाल में फंसाया-

सब काम बिलकुल खुल्लम-खुल्ला चल रहा था, संस्था की वेबसाइट पर बाकायदा साफ शब्दों में लिखा हुआ है कि उसका लक्ष्य 'गरीबी में पल रहे बच्चों को जिम्मेदार और संपन्न ईसाई नौजवान बनाना है'। मोदी सरकार की जांच में चेन्नई के 'करुणा बाल विकास ट्रस्ट' और 'कंपैशन ईस्ट इंडिया' नाम के दो एनजीओ सबसे पहले फंसे थे इन दोनों एनजीओ को 'कंपैशन इंटरनेशनल' से करोड़ों रुपये की फंडिंग की जा रही थी और उस पैसे से गरीबों की सहायता के नाम पर ईसाई बनाने का काम धड़ल्ले से चल रहा था। जांच के आगे बढ़ने पर अन्य एनजीओ की गतिविधियों का कच्चा-चिट्ठा भी खुलकर सामने आ गया। मीडिया को भी पैसे दे कर खरीद रखा था कंपैशन इंडिया ने।

सूत्रों के मुताबिक सरकार को जांच में ये बात भी पता चली कि 'कंपैशन इंटरनेशनल' की ओर से भारत के कुछ मीडिया संस्थानों के मुँह में भी पैसे ठूंसे जा रहे थे। इन बिकाऊ अखबारों और चैनलों ने एनजीओ के खिलाफ मोदी सरकार की पाबंदी के खिलाफ बाकायदा खबरें भी छापी थी। यह वही बिकाऊ मीडिया संस्थान हैं जिन्होंने मोदी सरकार बनने के बाद सरकार को बदनाम करने के लिए चर्च पर हमले की झूठी खबरें भी फैलाई थी। ❑

अनुकरणीय

- तारा माहेश्वरी

वनवासी छात्रों के साथ मनाया सान्वी का जन्मदिन

युवा समिति द्वारा संचालित विविध गतिविधियों के फलस्वरूप समाज में नए उत्साह का संचार हुआ है। युवा कार्यकर्ता प्रतिवर्ष आठवीं-नौवीं एवं दसवीं के बालक-बालिकाओं को बुलाकर कोचिंग देते हैं। गत वर्ष बंगाल के 8 छात्रावासों के 56 वनवासी बालक-बालिकाओं को 20 से 30 दिसम्बर तक मानिकतल्ला स्थित कल्याण भवन में बुलाकर कोचिंग दी गई। इस महत्वपूर्ण कार्य को देखने समझने के लिए एक दिन जैन समाज की महिलाएं आई एवं कार्यकर्ताओं के सेवाभाव एवं वनबंधुओं की सरलता देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई। उन्हीं में से एक बहन के मन में विचार आया कि क्यूँ न इस वर्ष अपनी बेटी सान्वी का जन्मदिवस वनवासी बच्चों के साथ मनाया जाये। अपनी मन की भावना को मूर्तरूप देते हुए 30 दिसम्बर को सान्वी के दादा श्री गोपालराम सरावगी अपने पूरे परिवार के साथ कल्याण भवन आ गये। मधुर भावपूर्ण गीत एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ जन्मदिवस मनाया गया। जीवेम् शरद: शतम् की शुभकामनाएं दी गई। सान्वी को चारों ओर से वनवासी बालक-बालिकाएं घेरे थे। सबकी आँखों में उल्लास भरी शुभकामनाएं नर्तन कर रही थी। पौत्री के जन्मदिवस के पावन अवसर पर दादाजी ने सभी बच्चों को अंग्रेजी-बांग्ला शब्दकोश सहित कॉपी, पेन्सिल आदि शिक्षण सामग्री भेंट की। अपनी ओर से बच्चों को भोजन करवाया। सान्वी की दादी एवं मां की खुशियों की तो कोई सीमा ही नहीं थी। वे बार-बार कल्याण आश्रम के कार्य की प्रशंसा कर रही थी। उन्होंने नि:संकोच होकर स्वीकार किया कि उनके लिए सान्वी का यह सातवां जन्मदिवस अविस्मरणीय बन गया है। ❑

वनवासी का स्मरण सर्वोच्च प्राथमिकता

हमारी महिला प्रमुख श्रीमती उषा अग्रवाल का पुत्र राहुल बचपन से ही कल्याण आश्रम से जुड़ा हुआ है। वह बाल्यकाल से ही वनवासी क्षेत्रों में उत्साहपूर्वक जाया करता था। अपने हर जन्मदिवस पर निश्चित धनराशि सेवापात्र में देता रहा है। अब तो वह लंदन की एक बड़ी कंपनी में कार्यरत है।

संयोगवश विमुद्रीकरण के समय राहुल भारत आया हुआ था। उसके परिवारजनों ने पूछ ही लिया कि इस बार तुम सेवा पात्र में राशि किस प्रकार डालोगे?

हँसते हुए उसने जेब में हाथ डाला और बढ़कर सेवापात्र थाम लिया। कुछ भी हो कार्य की निरंतरता तो बनी ही रहनी चाहिए-उसने कहा। इसी प्रसंग से मिलता जुलता हर्षा श्यामसुखा का दृष्टांत है।

विवाह के पूर्व हर्षा युवा समिति की सक्रिय समर्पित कार्यकर्ता रही है। विवाह के पश्चात यद्यपि प्रत्यक्ष कार्य में उसका सहभाग नहीं रहा पर मन से वनवासी बंधु के लिए दायित्व बोध कभी क्षीण नहीं हुआ। विवाह के तीन वर्ष पश्चात हर्षा को पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई।

आनन्द के इस अवसर पर हर्षा को सबसे पहले अपने वनवासी बंधुओं का स्मरण आया। उसने सहर्ष 5100/- की धनराशि उनकी शिक्षा के लिए समर्पित कर दी। इन दोनों घटनाओं से बोध मिला कि जिस प्रकार बगीचे को बिना माली के संरक्षण एवं देखभाल के हरा भरा नहीं रख सकते उसी प्रकार देश एवं समाज की भावी पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु एक बड़े लक्ष्य के साथ जोड़ना आवश्यक है।

बाल्यकाल के संस्कार सदैव उन्हें सत्पथ पर चलने एवं सत्कार्य करने हेतु प्रेरित करते रहेंगे। ❑

बोधकथा .....

सूई और कैंची

किसी गांव में एक दर्जी रहता था। वह दिन भर अपने काम में लगा रहता था और इसी बीच समय निकालकर ईश्वरोपसना करता था। वह प्राय: कहीं जाता नहीं था लोग ही उसके पास आते। कई बार वह लोगों की बड़ी-बड़ी समस्याएं चुटकियों में सुलझा देता था। गांव के लोग कहते कि उसका स्वभाव फकीर जैसा है। उसका एक बेटा भी था, जो गांव की पाठशाला में पढ़ता था। एक दिन पाठशाला से जल्दी लौट आया। आकर वह अपने पिता के पास बैठ गया। वह बड़े ध्यान से अपने पिता को काम करते हुए देखने लगा। उसने देखा कि उसके पिता कैंची से कपड़े को काटते हैं और कैंची को पैर के पास टांग से दबाकर रख देते हैं। फिर सूई से उसको सिलते हैं और सिलने के बाद सूई को अपनी टोपी पर लगा लेते हैं। जब उसने इसी क्रिया को चार-पांच बार देखा तो उससे रहा नहीं गया और उसने अपने पिता से पूछा, 'मैं बड़ी देर से आपको देख रहा हूँ। आप कपड़ा काटने के बाद कैंची को पैर के नीचे दबा देते हैं और सूई से कपड़ा सिलने के बाद उसे टोपी पर लगा लेते हैं। ऐसा क्यों ? अपने बेटे के इस प्रश्न पर दर्जी मुस्कुराया, फिर उसने जवाब दिया, 'बेटा, कैंची काटने का काम करती है और सूई जोड़ने का काम करती है। काटने वाले की जगह हमेशा नीचे होती है, पर जोड़ने वालों की जगह हमेशा ऊपर होती है। यही कारण है कि मैं सूई को टोपी पर लगाता हूँ और कैंची को पैर के नीचे।' बेटे को इस वाक्य में जीवन का सार मिल गया। ❑

आवश्यक सूचना

वनक्षेत्रों से आया शुद्ध मधु कल्याण आश्रम के बांगड़ बिल्डिंग कार्यालय में उपलब्ध है।

कविता .....

नव वर्ष आया है द्वार

- शशि पाधा

नव वर्ष आया है द्वार
मंगल दीप जलें अम्बर में
मंगलमय सारा संसार
आशाओं के गीत सुनाता
नव वर्ष आया है द्वार

स्वर्ण रश्मियाँ बाँध लड़ी
ऊषा प्राची द्वार खड़ी
केसर घोल रहा है सूरज
अभिनन्दन की नवल घड़ी
चन्दन मिश्रित चले बयार
नव वर्ष आया है द्वार

प्रेम के दीपक नेह की बाती
आँगन दीप जलाएँ साथी
बदली की बूँदों से घुल मिल
नेह सुमन लिख भेजें पाती
खुशियों के बाँटें उपहार
नव वर्ष आया है द्वार

नव निष्ठा नव संकल्पों के
संग रहेंगे नव अनुष्ठान
पर्वत जैसा अडिग भरोसा
धरती जैसा धीर महान
सुख सपने होंगे साकार
नव वर्ष आया है द्वार ! ❑

मकर संक्रान्ति कैम्प की झलकियाँ

उत्तर हावड़ा कैम्प

हावड़ा महानगर कैम्प

हावड़ा महानगर कैम्प

सॉल्टलेक एफ.डी.ब्लॉक कैम्प

अवनी समिति कैम्प

बालीगंज समिति कैम्प

वनवासी बंधु हित स्नेह भाव से धन-वस्त्रादिक लाता,
संक्रान्ति शिविर में दाता ऋणानुबंध से मुक्ति पाता।

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post